• पटना • मंगलवार • 13 दिसम्बर 2011 हिन्दुस्तान

सरस मेले में जीवंत हुई ग्रामीण संस्कृति

पटना | वरीय संवाददाता

राजधानी में इन दिनों गांव-देहात की संस्कृति जीवंत हो उठी है। सुदूर इलाकों की लोकसंस्कृति, कला व संगीत की खुशबू से शहर सुवासित हो रहा है। ग्रामीण महिलाओं द्वारा बनाए गए हैंडलूम व हैंडीक्राफ्ट सहज ही लोगों को लुभा रहे हैं। साथ में गांव के चौपाल पर बजने वाला संगीत भी धूम मचाए हुए है। गांव-देहात के मशहूर व्यंजनों की खुशबू से मुंह पानी से भर जा रहे हैं।

बिजली बोर्ड कालोनी स्थित मैदान में बिहार शताब्दी ग्रामोत्सव सह क्षेत्रीय सरस मेले का आयोजन किया गया है। ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार व ग्रामीण विकास विभाग बिहार सरकार की ओर से संयुक्त रूप से आयोजित इस मेले में बिहार के विभिन्न जिलों के साथ ही देश के 15 राज्यों की स्वयं सहायता समूहों द्वारा स्टॉल लगाए गए हैं। मधुबनी पेंटिंग्स मेले का आकर्षण बना हुआ है। साथ ही टेरीकोटा व जरी के सामान, हाथ की कढाई वाले कपडे, स्कार्फ, कुर्ता, साड़ियां, ऊनी शॉल से मेले की रौनक बनी हुई है। शाम में सांस्कृतिक संध्या में लोक कलाकारों ने लोकसंगीत का जादू

उमड़ी भीड़

- लोकसंगीत की धूम, हैंडलूम व हैंडीक्राफ्ट के सामान की मांग
- फैल रही मशहूर ग्रामीण व्यंजनों की खुशबू

चलाया। झूमर, झिझिया, सोहर, कजरी की प्रस्तुति ने ग्रामीण माहौल बना दिया। त्रिवेणी संगीत कला केन्द्र व स्वरांगन के कलाकारों ने अपने नृत्य व संगीत से समां बांधा। भोजपुरी के लोकगायक अवधेश कुमार ने देवी भजन 'सिंह पर एक कमल एराजित ताही पर मां..' से शुरुआत की। इसके बाद पूरबी गीतों से लोगों को झुमा दिया। लोकनृत्य में सोनी कुमारी, राजीव तिवारी, मानसी श्रीवास्तव, शिल्पी शामिल थीं। इस मौके पर जीविका के आयुक्त अरविंद कुमार चौधरी, निदेशक लेखा डीआरडीए खुर्शीद आलम, निदेशक एनईपी दयानन्द मिश्रा, संयुक्त निदेशक संजय कुमार सिंह, बरुण कुमार सिंह व प्रीति सिन्हा भी मौजूद थीं। इस अवसर पर आशा सहनी, अनुराधा कुमारी, सीएन गुप्ता, नागेन्द्र मिश्रा व विनय को लक्की कूपन ड्रा का विजेता घोषित किया गया।